A.B.G.M.V. MANDAL
MUMBAI

संगीत संस्कार पाठ्यक्रम

व्यक्तित्व विकास में संगीत की भूमिका

परीक्षा संगीत संस्कार
गायन – वादन, भाग -1

उद्देश्य :- इस वर्ष हमें विद्यार्थियों पर संगीत के संस्कार एवं उसके प्रति रूचि निर्माण करना हैं, क्योंकि स्वर और ले के आधारस्तंभ है |
"स्वर" संगीतरूपी भाषा के अक्षर है और "लय" संगीतरूपी भाषा का व्याकरण है|

सूचना :- इस वर्ष में लय और ताल का क्रियात्मक संगीत में साधारण प्रयोग विद्यार्थी से अपेक्षित है | इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी | लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्तता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन श्रेणी के आधार पर होगा | (अ+, अ , ब+, ब)

पाठ्यक्रम :-

1. आसन बैठक – ओंकार का उच्चारण (षडज स्वर में)
2. भाषा सीखने के लिये जिस प्रकार हम पहले स्वर और व्यंजन बोलना सीखते है, उसी प्रकार संगीत में ओंकार का उच्चारण :- सा-प-सां और सा-म-सां |
3. सात स्वरों का शुद्धता पूर्वक गायन तथा लय के साथ स्वरों का अभ्यास करवाना |
4. संगीत में ध्वनियों के साथ स्वरों का अभ्यास किया जायेगा – जैसे स्वरों का आकार, ईकार, उकार, एकार और ओंकार में गाने की क्षमता- सिर्फ एक ही स्वर ध्यान में रखते हुये |
5. दृक, श्राव्य माध्यम से संगीत की शिक्षा, चित्र के माध्यम से संगीत का परिचय, छोटे छोटे लयबद्ध स्वर समूहों का उच्चारण, लयबद्ध बालगीत, पशु-पक्षी के गीत, पर्यावरण गीत, प्रादेशिक गीत आदि |
6. सांगीतिक श्रवण रुचि निर्माण करने हेतु तथा संगीत में आनंद के लिये आवाज की दुनिया में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना | विविध बालगीतों का श्रवण |
7. सांगीतिक खेलों के माध्यम से अभ्यास जैसे अंताक्षरी और उसके विविध प्रकार
8. राष्ट्रगीत-जनगणमन
9. अंको की सहायता से दादरा और कहरवा एवं तीनताल बोलने का अभ्यास
10. भूप राग में आरोह – अवरोह और सरगम गीत

परीक्षा संगीत संस्कार
तबला-पखावज, भाग -1

उद्देश्य :- इस वर्ष हमें विद्यार्थियों पर संगीत के संस्कार एवं उसके प्रति रुचि निर्माण करना है, क्योंकि स्वर और लय संगीत के आधारस्तंभ है |
'स्वर' संगीतरूपी भाषा के अक्षर है और 'लय' संगीतरूपी भाषा का व्याकरण है |

सूचना :- इस वर्ष में लय और ताल में परिचित होना विद्यार्थी से अपेक्षित है | इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी | लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्तता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन श्रेणी के आधार पर होगा | (अ+, अ , ब+, ब)

- **पाठ्यक्रम :-**

1. आसन बैठक – ओंकार का उच्चारण |
2. अपने वाद्य का परिचय |
3. भाषा सीखने के लिये जिस प्रकार हम पहले स्वर और व्यंजन बोलना सीखते है, उसी प्रकार तबला पखावज में वर्णों का उच्चारण एवं वादन | उदा. ना, ता, तीं, गे, क, दीं, धा, धीं |
4. मात्र, सम, आवर्तन का सामान्य ज्ञान |
5. चार, छह, आठ मात्रा के आवर्तनों का लयात्मक ज्ञान |
6. दृक, श्राव्य माध्यम से संगीत की शिक्षा,चित्र के माध्यम से संगीत का परिचय, छोटे छोटे लयबद्ध बोल समूहों का उच्चारण | उदा. तीट, तिरकिट, तीटकता, गदीगन |
7. सांगीतिक श्रवण रूचि निर्माण करने हेतु तथा संगीत में आनंद के लिये आवाज की दुनिया में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना, विविध ताल वाद्यों का श्रवण |
8. सांगीतिक खेलों के माध्यम से अभ्यास | उदा. गिनती और उसके विविध प्रकार
9. अंको की सहायता से दादरा और कहरवा बोलने का अभ्यास |
10. दादरा और कहरवा बजाने का अभ्यास |

परीक्षा संगीत संस्कार
कथक (नृत्य), भाग -1

उद्देश्य :- इस वर्ष हमें विद्यार्थियों पर संगीत के संस्कार एवं उसके प्रति रुचि निर्माण करना है, क्योंकि स्वर और लय संगीत के आधारस्तंभ है |
'स्वर' संगीतरूपी भाषा के अक्षर है और 'लय' संगीतरूपी भाषा का व्याकरण है |

सूचना :- इस वर्ष में नृत्य और ताल में परिचित होना विद्यार्थी से अपेक्षित है | इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी | लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्तता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन श्रेणी के आधार पर होगा | (अ+, अ , ब+, ब)

- **पाठ्यक्रम :-**

1. ओंकार का उच्चारण
2. चित्रद्वारा विविध नृत्यशैलियों का परिचय (जहाँ हो सके वहाँ व्हीडीओ द्वारा नृत्यका दर्शन)
3. तालीद्वारा लय का परिचय (गायन / वादन संगीत सुनाना)
4. कथक शैलिनुसार खड़े रहने का अभ्यास |
5. पदाघात का अंदाज 8 मात्रा (तत्कार) |
6. हस्तसंचालन का प्राथमिक परिचय।
7. कत्थक के लिए वेषभूषा का परिचय और वाद्य परिचय।
8. विशिष्ट दिशामें लय के साथ चलने का अभ्यास |
9. प्रादेशिक नृत्य की पहचान | (चित्र एवं विडिओ द्वारा)
10. अभिनय गीत का प्रस्तुतीकरण |
11. अंकों के माध्यम से 16 मात्राओं की गिनती |

परीक्षा संगीत संस्कार
भरतनाट्यम् (नृत्य), भाग -1

उद्देश्य :- इस वर्ष हमें विद्यार्थियों पर संगीत के संस्कार एवं उसके प्रति रुचि निर्माण करना है, क्योंकि स्वर और लय संगीत के आधारस्तंभ है |
'स्वर' संगीतरूपी भाषा के अक्षर है और 'लय' संगीतरूपी भाषा का व्याकरण है |

सूचना :- इस वर्ष में नृत्य और ताल में परिचित होना विद्यार्थी से अपेक्षित है | इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी | लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्तता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन श्रेणी के आधार पर होगा | (अ+, अ , ब+, ब)

- **पाठ्यक्रम :-**

1. ओंकार का उच्चारण |
2. चित्रद्वारा विविध नृत्यशैलियों का परिचय |(जहाँ हो सके वहाँ व्हीडीओ द्वारा नृत्य का दर्शन)
3. भरतनाट्यम् शैली में खड़े रहने के लिये किये जाने वाले कोई भी पाँच व्यायाम के प्रकार |
4. तालीद्वारा लय का परिचय | (गायन / वादन संगीत सुनाना)
5. हस्तसंचालन का प्राथमिक परिचय।
6. भरतनाट्यम् के लिए वेषभूषा का परिचय और वाद्य परिचय।
7. विशिष्ट दिशामें लय के साथ चलने का अभ्यास |
8. प्रादेशिक नृत्य की पहचान | (चित्र एवं विडिओ द्वारा)
9. अभिनय गीत का प्रस्तुतीकरण |